ikFkfed fo|ky;ks esa fu;qDr iq:"k ,oa efgyk oxZ ds f'k{kkfe=k dh f'k{k.k vfHkof̀Ùk;ksa Kkr djuk

fufèk 'kqDyk
'kkèk Nk=k
f'k{kk foHkkx
oSDVj oj fo0fo0] xtjkSYk

Mk0 èkeZUnz dqekj
,lksf'k,V izksQslj
vè;kid f'k{kk foHkkx
oèkeku dkyst] fctukSj

1.izLrkouk

शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगो शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम में शिक्षक की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि विद्यालय शिक्षण कार्यक्रम की बात सोंचे तो शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया की धुरी होता है। उसके निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी, समाज ज्ञानार्जन की उचित दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता। पाठ्यवस्तु को सरल और बोधगम्य बनाने में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को देश काल की आवश्यकतानुसार सही दिशा प्रदान करते हैं। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित पाठ्यक्रम को समाप्त करने से लेकर भावी नागरिको के सर्वांगीण विकास तक होती है। इस प्रकार व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका अनिवार्य है। इसलिए यह शिक्षक के ऊपर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है। एक प्रकार से शिक्षक का व्यक्तित्व जैसा होगा उसके द्वारा तैयार किये गये नागरिक भी काफी कुछ वैसे ही होंगे। शिक्षक स्वयं भी उन गुणों से युक्त हो, जिन गुणों की शिक्षा वह बालकों को दे रहा है। इस प्रकार आचार्य (शिक्षक) के आचरण का प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव छात्रों पर पड़ना अवश्म्भावी है, क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण उदाहरण ळें

शिक्षण व्यवसाय को अपनाने वाले शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति का अध्ययन करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण विषय है। इसके लिए उसमें ज्ञान के विस्तार की रूचि, उच्च अभिक्षमता, अभिवृति, मूल्य, विश्वास, शिक्षण व्यवसाय के प्रति उसकी वचनबद्धता व समर्पण का भाव होना आवश्यक है, क्योंकि नियुक्ति के समय शिक्षक शिक्षण के प्रति वचनबद्धता दिखाता है कि वह समय का पालन, अनुशासन प्रिय, देश भक्त, दयाशील, क्षमाशील व नवीन ज्ञान के प्रति जागरूक रहेगा। लेकिन नियुक्ति के बाद जब उसकी नियुक्ति उसकी पसन्द के स्थान पर नहीं होती है तब वह शिक्षण कार्य को भार स्वरूप ढोते हैं, जिसमें न ही समर्पण की भावना है न ही वचनबद्धता। भले ही उनके अन्दर शिक्षण अभिवृत्ति है किन्तु वह उनके कार्य में परिलक्षित नहीं होती। शिक्षकों में उपयुक्त गुणों के अभाव का आभास होने पर बालकों में भी ये गुण हस्तानान्तरित नहीं हो पाते फलस्वरूप प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव छात्रों पर पड़ता है इसी तथ्य पर प्रकाश डालते हुए lk;nu कहते है ''यदि शिक्षक जलता हुआ दीप नहीं है तो वह दूसरों में ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशित करने में असमर्थ होगा''।

अतः शिक्षण व्यवसाय में उन्हीं व्यक्तियों को चयनित किया जाना चाहिए जिनकी शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृति हो। एक सकारात्मक व अनुकूल अभिवृति शिक्षण कार्य को आसान ही नहीं बनाती बल्कि बहुत संतुष्टि व व्यवसायिक परितोषिक/पुरूस्कार भी प्रदान करती है, जबकि नकारात्मक व प्रतिकूल अभिवृति शिक्षण कार्य को कठिन, अरूचिकर

बोझिल व व्यवसाय के प्रति लगाव में कमी को अभिव्यक्त करती है। अतः यह विचार स्वतः ही मस्तिष्क में आया कि कहीं शिक्षक इसके लिए जिम्मेदार तो नहीं कि जो शिक्षामित्र शिक्षण व्यवसाय में आ रहे है उनकी अध्यापन के प्रति अभिवृति है अथवा नहीं। अतः एक ऐसी नवीन समस्या जिसकी समाज में उपयोगिता हो और भारत सरकार द्वारा प्राथमिक स्तर पर किये जा रहे प्रयास सकारात्मक परिणाम दे सके। अतः इस समस्या पर विचार करते हुए गहन अध्ययन व परिश्रम के उपरान्त शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया और उस क्षेत्र की समस्या शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृति के अध्ययन को शोधकार्य के लिए चुना।

इन सभी दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने ikFkfed fo|ky;k e fu;Dr i:"k ,o efgyk oxZ d f'k{kkfe=k dh f'k{k.k vfHkofÙk;k Kkr djuk को अपने शोध का विषय चुना है।

2. leL;k dFku

ikFkfed fo|ky;k e fu;Dr i:"k ,o efgyk oxZ d f'k{kkfe=k dh f'k{k.k vfHkofÙk;k Kkr djukA

3. vè;;u d m}s';

1. पुरूष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्तियां ज्ञात करना।

4. vè;;u dh ifjdYiuk;s

1.पुरूष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. vè;;u dh ifjlhek;s

यह शोध प्रबन्ध बिजनौर जनपद में स्थित परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षामित्रों तक सीमित है तथा इसके अन्तर्गत पुरूष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

6. 'kkèk fofèk

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु चयन समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री के लिए यह कठिन था कि सम्पूर्ण समष्टि पर अनुसंधान किया जाता, अतः अनुसंधान के लिए केवल उत्तर प्रदेश राज्य के बिजनौर जनपद में स्थित परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के 150 पुरूष एवं महिला शिक्षामित्रों का यादृच्छया चुनाव किया गया है।

7. 'kkèk midj.k

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में डा0 एस0पी0 अहलुवालिया द्वारा निर्मित, 1978 शिक्षक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया है।

8. vkdMksa dk fo'ys"k.k ,o fu"d"kZ

mís'; % पुरुष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्ति ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोधकार्य के उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री ने पुरुष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों पर शिक्षक अभिवृत्ति मापनी प्रसासित करते हुए प्राप्तांकों से मध्यमान, मानक विचलन तथा दोनों समूहों के मध्य टी. मूल्य प्राप्त किये,जो तालिका–1 में प्रदर्शित किये गये ळें

rkfydk &1 i#"k ,o efgyk oxZ d f'k{kkfe=k dh f'k{k.k vfHkofÙk l iklrkdk d eè;eku] ekud fopyu ,o Vh- eY;

क्रमांक	अभिक्षमता	समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मूल्य
1	शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	75	36.73	6.28	0.29
		महिला	75	37.03	6.41	
2	कक्षा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	75	36.84	6.42	0.31
		महिला	75	36.52	6.38	
3	बाल केन्द्रित अभ्यासों के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	75	36.48	6.56	0.46
		महिला	75	36.96	6.39	
4	शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	75	36.55	6.47	0.18
		महिला	75	36.74	6.59	
5	छात्रों के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	75	36.70	6.54	0.11
		महिला	75	36.82	6.61	
6	साथी शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	75	36.43	6.32	0.33
		महिला	75	36.77	6.45	
7	सभी शिक्षण अभिवृत्तितियों के प्रति अभिवृत्तिया	पुरुष	75	36.75	6.53	0.23
		महिला	75	37.00	6.47	

ifjdYiuk % पुरुष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्रम संख्या 1 पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.73, मानक विचलन 6.28 व महिला शिक्षामित्रों का मध्यमान 37.03, मानक विचलन 6.41 हैं पुरुष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षामित्रों से कम पाया गया। मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.29 प्राप्त हुआ। जो टेबल डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः इस भाग की शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

क्रम संख्या 2 पर कक्षा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.84, मानक विचलन 6.42 व महिला शिक्षामित्रों मध्यमान 36.52, मानक विचलन 6.38 हैं। पुरुष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षामित्रों से अधिक पाया गया। मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.31 प्राप्त हुआ। जो टेबल डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नही करता है। अतः इस भाग की शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

क्रम संख्या 3 पर बाल केन्द्रित अभ्यासों के प्रति अभिवृत्ति में पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.48 मानक विचलन 6.56 व महिला शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.96, मानक विचलन 6.39 है। पुरुष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षामित्रों से कम पाया गया। मध्यमानों, व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.46 प्राप्त हुआ। जो टेबल डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः इस भाग की शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

क्रम संख्या 4 पर शैक्षिक प्रक्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति मे पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.55, मानक विचलन 6.47 व महिला शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.74, मानक विचलन 6.59 है। पुरुष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षामित्रों से कम पाया गया। मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.18 प्राप्त हुआ। जो टेबल

डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः इस भाग की शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

क्रम संख्या 5 पर छात्रों के प्रति अभिवृत्ति में पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.70, मानक विचलन 6.54 व महिला शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.82, मानक विचलन 6.61 है। पुरुष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षामित्रों से कम पाया गया। मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.11 प्राप्त हुआ जो टेबल डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः इस भाग की शून्य परिकलपना को स्वीकार किया जाता है।

क्रम संख्या 6 पर साथी शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति में पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.43, मानक विचलन 6.32 व महिला शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.77, मानक विचलन 6.45 हैं पुरूष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षामित्रों से कम पाया गया। मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.33 प्राप्त हुआ। जो टेबल डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः इस भाग की शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।
क्रम संख्या 7 जो 1 से 6 तक की अभिवृत्तियों का औसत है। इमसें पुरुष शिक्षामित्रों का मध्यमान 36.75, मानक विचलन 6.53 व महिला शिक्षामित्रों का मध्यमान 37.00, मानक विचलन 6.47 हैं पुरुष शिक्षामित्रों का मानक विचलन महिला शिक्षक शिक्षामित्रों से कम पाया गया। मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना करने पर टी. मूल्य 0.23 प्राप्त हुआ। जो टेबल डी के अनुसार 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

9. foopuk

परिकल्पना ''पुरुष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' इसको स्वीकार किया जाता है क्योंकि इस परिकल्पना के आन्तरिक भाग शिक्षण व्यवसाय के प्रति, कक्षा शिक्षण के प्रति, बाल केन्द्रित अभ्यासों के प्रति, शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति, छात्रों के प्रति अभिवृत्ति, साथी शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति व सभी शिक्षण अभिवृत्तियों के मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना से प्राप्त टी. मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सार्थक अन्तर न होने का कारण पुरुष एवं महिला वर्ग का शिक्षण व्यवसाय के प्रति गहरा लगाव है। दोनों ही शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है। और शिक्षण व्यवसाय को अन्य व्यवसाय की अपेक्षा अधिक महत्व देते है।

10. fu"d"k

परिकल्पना ''पुरूष एवं महिला वर्ग के शिक्षामित्रों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' इसकों स्वीकार किया जाता है। क्योंकि इस परिकल्पना के आन्तरिक भाग शिक्षण व्यवसाय के प्रति, कक्षा शिक्षण के प्रति बाल केन्द्रित अभ्यासों के प्रति, शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति, छात्रों के प्रति, साथी शिक्षकों के प्रति व सभी शिक्षण अभिवृत्ति के प्रति अभिवृत्तियों के मध्यमानों व मानक विचलनों की गणना से प्राप्त टी0 मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सार्थक अन्तर न होने का कारण दोनों वर्ग शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

lUnHk xzUFk lph

1. कुमार (1974). अजमेर जिले के विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन एम.एड. म.द.स.वि.वि. अजमेर
2. जैन. अलका (1996). अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों की बालकेन्द्रित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी समस्याओं का अध्ययन एम.एड़, म.द.स.वि.वि., अजमेर.

3. शेखावत कृष्ण गोपाल सिंह (1999)**.** अजमेर जिले के शहरी एंव ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों व अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो के अनुदेशको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड., म.द.स.वि.वि., अजमेर.
4. भदेल अनिता. (1999)**.** माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एंव अभिरूचि का अध्ययन, एम. एड., म.द.स.वि.वि., अजमेर.
5. भानु प्रताप. (2001)**.** प्रारम्भिक शिक्षा के भावी शिक्षको की अध्यापक अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता एंव समर्पण स्तर का एक अध्ययन एम.एड., म.द.स.वि.वि., अजमेर.
6. कुमार डी० (2005)**.** भावी प्राथमिक अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन (एम०एड० लघुशोध प्रबन्ध) एम०डी०एस० विश्वविद्यालय, अजमेर